शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 1; जूलाई-दिसंबर, 2020; पृष्ठ संख्या : 73-81

भारतीय परिवार व्यवस्था में स्त्री की भूमिका:

'पारिजात' उपन्यास के विशेष संदर्भ में

तृप्ति रानी आचार्य

एम.ए., एम.फिल.

शोध-सार

कहते हैं कि जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता रमण करते हैं।भारतीय समाज में नारियों के बिना किसी भी धार्मिक या सामाजिक कार्य का सफल निष्पादन नहीं होता है।भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान हमेशा से गौरवपूर्ण रहा है।नारी सृष्टि की एक अनुपम रचना है, जिसके बिना यह पूरा संसार सारहीन है।एक ही समय में एक स्त्री, माँ, बहन, पत्नी, दोस्त जैसे कई अहम भूमिकाएँ निभाने की शक्ति रखती है।वह स्त्री ही है, जो एक परिवार को सम्भालती है।परिस्थिति चाहे कैसी भी हो, भारतीय नारी अपने पति का साथ नहीं छोड़ती, वह अपनी विवेक-बुद्धि तथा अतुलनीय सहनशक्ति के बल पर अपने परिवार को सुचारु रूप से चलाती है।जिस परिवार में स्त्री ठीक न हो, वह घर बिना चालक की गाड़ी जैसा होता है, जो कभी भी दुर्घटना का शिकार बन सकता है, टूटकर बिखर सकता है।नासिरा शर्मा-कृत उपन्यास 'पारिजात' में भी लेखिका ने यही दिखाने का सफल प्रयास किया है कि किस प्रकार घर के टूटने-बिखरने में एक स्त्री मुख्य भूमिका निभाती है।नासिरा शर्मा का 'पारिजात' पुरुष चरित्र प्रधान उपन्यास है, जहाँ लेखिका ने यह दिखाया है कि हमारे देश में महिलाओं की सुरक्षा के लिए जो कानून बनाये गये हैं, कुछ महिलाएँ उनका दुरुपयोग करती आ रही हैं।फलस्वरूप पति-पत्नी का संबंध टूटकर बिखर जाता है और बच्चों के ऊपर उसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।प्रस्तुत शोध आलेख में परिवार में 'पारिजात' उपन्यास के आधार पर स्त्री की भूमिका के संदर्भ में सविस्तार विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द : *भारतीय परिवार, परिस्थिति, सहनशक्ति, पारिवारिक विघटन।*

प्रस्तावना

हिंदी उपन्यास साहित्य के जगत में नासिरा शर्मा (1948) हमेशा शोषित वर्गों के लिए आवाज उठानेवाली एक सशक्त महिला उपन्यासकार हैं।वे कभी भी जाति, धर्म अथवा मर्द-औरत का पक्षपात नहीं करती हैं , बल्कि महिला होने के बावजूद उनके कई महत्वपूर्ण उपन्यास जैसे- 'अक्ष्यवट', 'कुईयाँजान', 'जीरोरोड' और 'पारिजात' के मुख्य चरित्र पुरुष हैं। नासिरा शर्मा सरहदों को नहीं पहँचानती, उनकी नजर में सारे इंसान बराबर हैं।नासिरा शर्मा ने हिंदी के उपन्यास जगत् को नई दिशाएँ और वैचारिक जमीन एवं संवेदना से भरे कई चरित्र दिये हैं, जिन्होंने हिंदी के पाठकों को प्रभावित किया है।नासिरा शर्मा की वैश्विक दृष्टि ने हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाया।वे एक निडर, साहसी और ईमानदार लेखिका हैं।वे उसी ज़मीन की पैदाइश हैं, जहाँ अनेक लेखक अपनी महत्वाकांक्षा और लोकप्रियता हासिल करने के लिए आतुर हैं और उसके लिए वे तरह-तरह के हथकंडे अपनाते हैं, तरह-तरह की जुगलबंदी करते हैं।ऐसे में नासिरा शर्मा इन सबसे हटकर उन लोगों की बात करती हैं , जो त्रासद परिस्थितियों के शिकार हैं।

प्रत्येक साहित्यकार की अपनी अलग पहचान होती है, व्यक्तित्व होता है। सहृदय होने के नाते साहित्यकार समाज के जिस परिवेश में पलते-बढ़ते हैं, उससे प्रभावित होकर साहित्य सृजन के जरिए अपना अलग संसार बनाते हैं। 'पारिजात' उपन्यास इसी बात का द्योतक है। प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु में इतिहास कहीं किरदार बनकर उभरता है, कहीं वर्तमान और अतीत के बीच सूत्रधार की भूमिका निभाते हुए नज़र आता है।उसकी इस आवाजाही में उपन्यास के पात्र कभी तारीख से गुजरे नज़र आते हैं, तो कभी उसको तलाश करते हुए खुद की खोज में लग जाते हैं।उनकी इस तलाश में बहुत से संदर्भ, शख्सियतें, घटनाएँ चाहे-अनचाहे अपने आकार ग्रहण कर लेते हैं और समय विशेष पर पड़ी धूल को अपनी उपस्थिति से खारिज कर एक नई स्थिति की तरफ ले जाते हैं।जहाँ दुनिया की भगदड़ के बीच रिश्तों की बहाली की जद्दोजहद अपनी सारी खूबसूरती और ऊर्जा के साथ मौजूद है।कहा जा सकता है कि नासिरा शर्मा का यह उपन्यास उनकी अबतक की सृजनात्मकता का निचोड़ है, इसमें उनके विचार, भाषा और संवेदना बहुत संजीदा और धारदार होकर उभरे हैं।

भारतीय परिवार-व्यवस्था का अध्ययन मात्र इसीलिए आवश्यक नहीं है कि हम भारतीय हैं, बल्कि इसलिए भी आवश्यक है, क्योंकि यह अन्य पाश्चात्य पारिवारिक व्यवस्था से कई मायनों में भिन्न है। भारतीय परिवार में पति-पत्नी के

अतिरिक्त बच्चे, पौत्र, दादा-दादी, नाना- नानी, बुआ आदि एक साथ रहते हैं। परिवार के इस सामूहिक रूप को संयुक्त-परिवार कहा जाता है।

इस संयुक्त-परिवार को अटूट रखने का एकमात्र श्रेय उस परिवार की स्त्रियों को जाता है। क्योंकि भगवान ने स्त्रियों को अतुलनीय सहनशक्ति सम्पन्न बनाया है।प्रतिकूल परिस्थितियों में भी वह अपने पति का साथ नहीं छोड़ती।पहले की तुलना में आज की स्त्रियाँ अत्यंत सशक्त हैं।अब लड़कियों को उच्च शिक्षा से शिक्षित कराया जा रहा है, महिलाएँ अपने हक़ और अधिकार के प्रति सजग रही हैं।वे अपने ऊपर होनेवाले अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाने में सक्षम हैं। महिलाओं की सुरक्षा के लिए नए-नए कानून बनाए गए हैं; पर दुर्भाग्य की बात है कि कुछ महिलाएँ इन सुरक्षा के उपायों का दुरुपयोग कर पुरुषों का शोषण करने लगी हैं।आलोच्य उपन्यास 'पारिजात' में भी कुछ ऐसी घटनाएँ दिखायी गयी हैं।

उपन्यासकार नासिरा शर्मा का रचना-संसार अत्यंत व्यापक है। उन्होंने अपनी सृजनात्मकता से हिंदी साहित्य जगत् को समृद्ध किया है। हमारे इस अध्ययन का मूल केंद्र उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास 'पारिजात' (2011) है।

विश्लेषण

इस शोध आलेख का मुख्य विषय है परिवार और स्त्री।ये दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं।परिवार से जोड़े रहने अथवा टूटने-बिखरने का श्रेय उस घर की स्त्रियों को ही जाता है। स्त्री यदि चाहे तो अपने घर को सुख-समृद्धि से लबरेज कर सकती है, वहीं वह चाहे तो अपने घर को टूकड़ो में बाँट सकती है। हमारे भारतीय परिवारों में लड़कियों को बचपन से ही यह सीख दी जाती है कि पति का घर उसका असली घर होता है। वहाँ सास-ससुर होते हैं, उनका सम्मान करना उसका धर्म है, देवर-ननद अपने भाई-बहन से भी अधिक अपना है, उन्हें प्यार देना चाहिए इत्यादि।एक वाक्य में कहा जाए तो स्त्री माला में व्यवहृत वह धागा है, जो मन को एक सूत्र में बाँधकर रखती है।अगर वह धागा सख्त है, तो वह घर रूपी माला का कुछ भी नुकसान नहीं हो सकता और यदि वह ठीक न हो तो वह अनायास ही टूटकर बिखर जाएगी।'पारिजात' उपन्यास का मुख्य पात्र है रोहन और उसकी पत्नी है ऐलेसन।पूरा उपन्यास इन दोनों के वैवाहिक जीवन को लेकर लिखा गया है।प्रस्तुत उपन्यास में मुख्य रूप से चार स्त्री पात्र हैं - रोहन की माँ प्रभा, रोहन की पत्नी ऐलेसन, रोहन की दोस्त रूही और रूही की माँ फिरदौसजहाँ। ये सभी रोहन की जिंदगी तथा पारिवारिक उतार-चढ़ाव में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

माँ के रूप में स्त्री की भूमिका

नासिरा शर्मा ने 'पारिजात' उपन्यास में मुख्य रूप से दो चरित्रों को माँ के रूप में प्रस्तुत

किया है।पहला उपन्यास के नायक रोहन की माँ प्रभा और दूसरा चरित्र है नायिका रूही की माँ फिरदोसजहाँ।माँ संसार की वह शक्ति होती है, जो अपने बच्चों का भविष्य सुधार भी सकती है और बिगाड़ भी सकती है।माँ अंतर्यामी भगवान की भाँति अपने बच्चों के चाल-चलन और व्यवहार से उसका भविष्य भाँप सकती है; पर अपने वात्सल्य स्नेह के कारण कभी-कभी वह चाहकर भी कुछ कर नहीं सकती। रोहन की माँ प्रभा इलाहबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग की अध्यापिका थी, उनका पति यानी रोहन के पिताजी भी उसी विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के अध्यापक थे। ये दोनों अपनी हैसियत के हिसाब से एकमात्र पुत्र रोहन को विदेश में पढ़ाते हैं। रोहन पिता के मुकाबले अपनी माँ के ज्यादा करीब था।प्रभा भी उसको बहुत प्यार करती थी।रोहन देखने में भी बहुत प्यारा और स्वभाव से बहुत ही सरल था। दुनियादारी में अनुभवी उसकी माँ बेटे के लिए अत्यंत चिंतित थी।क्योंकि रोहन ने एक विदेशी युवती ऐलेसन से शादी करने का निर्णय कर लिया था। परंतु रोहन की माँ उसके इस फैसले से खुश नहीं थी।वे जानती थी कि वह विदेशी लड़की रोहन के लिए सही नहीं होगी; पर फिर भी वह कुछ नहीं कहती। रोहन की माँ डरती थी कि कहीं मना कर देने से रोहन को बुरा न लग जाए।हर साल जब रोहन वापस घर आता तो उसकी माँ प्रभा रोहन के स्वागत के लिए स्टेशन पहुँच जाती थी।उपन्यासकार ने लिखा है -

> हमेशा वह उसे लेने प्लेटफॉर्म पर बाबा के साथ खड़ी दूर से हाथ हिलाती उसे देखती ....रेलगाड़ी की धीमी होती रफतार के साथ कूदकर माँ के गले लग जाता।(शर्मा 2017:7)

रोहन स्वयं यह कहता है कि उसके पिताजी और वह नदी के दो किनारे हैं और उसकी माँ प्रभा उन दोनों को जोड़ कर रखनेवाली कड़ी।माँ तो होती ही ऐसी है कि बाप-बेटे के बीच की दूरी को मिटाती। माँ के महत्व को रोहन तब समझता है जब उसकी माँ प्रभा की मृत्यु हो जाती है। रोहन की माँ की मृत्यु भी रोहन के कारण ही हुई थी। क्योंकि रोहन को अपनी विदेशी लड़की के चक्रव्यूह में फँसकर जेल तक जाना पड़ा था, और यह सदमा रोहन की माँ प्रभा सह नहीं पाती और उनका देहांत हो जाता है। रोहन अपनी प्रेयसी ऐलेसन को जब पहलीबार अपने माता-पिता से मिलवाता है, तब से ही प्रभा को चिंता होने लगी थी; क्योंकि रोहन और ऐलेसन की उम्र में फर्क था। ऐलेसन रोहन से आठ साल बड़ी थी। ऊपर से ऐलेसन विदेशी संस्कारयुक्त थी।प्रभा वह अपने दिल की बात दिल में ही रखती है, क्योंकि वह अपने बेटे रोहन को दुखी नहीं करना चाहती थी।बेटे की खुशी के लिए वह रोहन की हाँ में हाँ मिलाती थी।रोहन को ये सारी बातें माँ की मृत्यु के बाद उनकी लिखी हुई डायरी पढ़कर पता चलती हैं । वह अपनी माँ को

और ज्यादा याद करने लगता है, वह अकेले में कहता है -

> आह...मैं कुछ भी सम्भलकर रख न पाया।मम्मी, आप मुझे क्यों छोड़कर चली गई।मैं बहुत अकेला हूँ...बहुत अकेला। (शर्मा 2017:225)

फिरदोसजहाँ रूही और मोनिस की माँ है। उम्र के साथ-साथ उनका शरीर भी कमजोर हो गया है। वह अपने बच्चों की याद में तड़पती रहती है। क्योंकि एक तो उनका बेटा मोनिस अपनी पत्नी के साथ विदेश में ही रहता है। फिर मोनिस को अपनी बीमार माँ की कोई परवाह ही नहीं है। परंतु रूही बिलकुल अलग है।वह बहुत ही प्यारी है। उसे अपनी माँ की परवाह भी है और वह जब-जब जरूरत हो उनसे मिलने भी जाती रहती है। बीमार फिरदौसजहाँ बार-बार अपने बेटे मोनिस को लौट आने के लिए कहती है; पर हर बार मोनिस अपनी माँ को नकार देता है।उसका कहना है कि पैसा जितना चाहे मांग लें; पर वापस लौटने की बात न करें, इससे फिरदौसजहाँ को गहरी ठेस पहुँचती है-

> कहते कहते फिरदौसजहाँ अपने आसूँ रोक नहीं पायी ।कैसे कहती कि मुझे चेक की नहीं तुम्हारी चाहत है। (शर्मा 2017:225)

इधर फिरदौसजहाँ अपनी बेटी रूही के अकाल वैधव्य के कारण अत्यंत चिंतित थी।रूही तो अब केवल तीस साल की ही हुई थी कि उसके पति की मृत्यु हो गई थी। फिरदौसजहाँ चाहती थी कि उनकी बेटी रूही दुबारा अपना घर बसाए, क्योंकि उनको इस बात का अनुभव था कि जायदाद जितनी भी हो, पति के बिना जवान औरत का कोई सम्मान नहीं करता -

> नॉवेल पढ़ते-पढ़ते रुकी और सोचने लगी कि ठीक इस कहानी की हिरोईन की तरह अगर रूही को कोई मिल जाए और उसका घर फिर से बस जाए तो क्या बुरा है।(शर्मा 2017:136)

फिरदौसजहाँ रोहन को भी अपने बेटे के जैसा ही प्यार करती थी। उसके साथ फोन पर बातें करती थी और हाल पूछती थी।बचपन में रोहन और रूही एक साथ ही खेलते-कूदते थे। अतः फिरदौसजहाँ के लिए मोनिस और रोहन में कोई फर्क नहीं था। वह एक माँ की तरह ही रोहन को जानती और समझती थी। रोहन जब पूरी तरह से बरबाद होकर लौटता है, तो उसकी बातों में फिरदौसजहाँ को परिवर्तन नजर आता है और बाद में रोहन के पिता प्रह्लाद दत्त से उन्हें सबकुछ पता चलता है। वह बहुत दुखी हो जाती है। उपन्यास के अंत में रूही और रोहन का मिलन दिखाया गया है, जो फिरदौसजहाँ की बजह से ही सम्भव हो पाता है।

बेटी के रूप में स्त्री की भूमिका

नासिरा शर्मा कृत 'पारिजात' उपन्यास में रूही को जुल्फिकर अली और फिरदौसजहाँ की बेटी के रूप में चित्रित किया गया है।रूही और मोनिस को इनके माता-पिता इन दोनों को अपनी हैसियत

के अनुसार शिक्षित करते हैं।मोनिस विदेश में ही बसने का निश्चय कर लेता है और रूही काजिम से शादी कर अपना घर बसाती है।एक बार इनके माता-पिता इनके समक्ष अपनी इच्छा प्रकट करते हुए कहते हैं कि पढ़ाई खत्म होने पर उन्हें अपने देश लौट आना चाहिए और यही रहना चाहिए।तब मोनिस इस बात को नकारते हुए कहता है कि इस देश में कुछ नहीं रखा है।अतः विदेश ही अच्छा है; पर रूही एक समझदार बेटी थी, वह अपने भाई का विरोध करती हुई उत्तर देती है -

> हमारे माँ-बाप हमारे दुश्मन नहीं हैं।अपने मुल्क में एक जगह से दूसरी जगह जाने और दूसरे मुल्क की सरहद में दाखिल होना दो अलग बातें हैं।(शर्मा 2017:34)

काजिम की आत्महत्या से रूही को गहरी ठेस पहुँचती है, जिससे वह डिप्रेशन की शिकार हो जाती है।रूही के ऊपर अब काजिम की अगाध सम्पत्ति की जिम्मेदारी आ जाती है। पर उस समय उसकी मानसिक स्थिति इन सबके प्रतिकूल थी।काजिम जिन संगठनों को आर्थिक सहायता प्रदान करता था।रूही चिंतित होती है कि काजिम के बाद वह अकेले क्या करेगी।लोग तरह-तरह की आलोचना करने लग जाते हैं।इन सबसे रूही की माँ फिरदौसजहाँ को भी चिंता सताती है, वे भी बीमार हो जाती है।रूही की डॉक्टरी चिकित्सा की जाती है, फलस्वरूप धीरे-धीरे रूही ठीक हो जाती है।ठीक होते ही रूही अपनी माँ से मिलने जाती है-

> रूही हाई हिल की एड़ी बजाती जब कमरे में दाखिल हुई तो फिरदौसजहाँ को जैसे यकीन नहीं आया।हैरत से पूछ बैठी- रूही.. ओह माई बेबी, माई स्वीट हार्ट, माई एपिल पाइ...यह मैं ख्वाब देख रही हूँ या... बस मम्मा, अब मुस्कराइए।हमने बहुत आँसू बहा लिए, अब नहीं। (शर्मा 2017:213)

फिरदौसजहाँ चाहती है कि रूही का घर दूबारा बस जाए तो बहुत अच्छा होता; क्योंकि इस दुनिया में बिना पति के औरतों का कोई सम्मान नहीं करता।अतः वह अपनी इच्छा की बात रूही से करती है।रूही भी सिर्फ और सिर्फ अपनी माँ की खुशी के लिए दूसरी शादी के लिए तैयार होती है -

> अगर मेरा फूलना-फलना ही मम्मा को सेहत दे सकता है तो मुझे घर बसा लेना चाहिए...
>
> (शर्मा 2017:452)

पत्नी के रूप में स्त्री की भूमिका

नासिरा शर्मा के 'पारिजात' उपन्यास में लेखिका ने रूही और ऐलेसन को पत्नी के रूप में चित्रित किया है।रूही काजिम की पत्नी है तथा ऐलेसन उपन्यास के नायक रोहन की पत्नी है।भले ही रूही और ऐलेसन दोनों पत्नियों के चरित्रों में चित्रण किया गया है; पर लेखिका ने इन दोनों स्त्रियों के माध्यम से पत्नी के सकारात्मक और

नकारात्मक दिशाओं की ओर संकेत किया है।उपन्यासकार के अनुसार रूही और ऐलेसन दोनों ने ही प्रेम-विवाह किया है, रूही और ऐलेसन दोनों ही आधुनिका तथा उच्च शिक्षा से शिक्षित हैं; परंतु रूही भारतीय संस्कार से युक्त है तथा ऐलेसन विदेशी संस्कार से।रूही एक ही समय में एक आदर्श पत्नी, आदर्श बेटी तथा आदर्श दोस्त की भूमिका निभाती है।इसके विपरीत ऐलेसन का चरित्र चारों ओर से नकारात्मक है।रूही ने काजिम से प्रेम-विवाह किया था, भले ही काजिम अपने पिता की अगाध सम्पत्ति का अकेला वारिस था , पर जब काजिम की मृत्यु हो जाती है, रूही ही सारी सम्पत्ति की मालकिन बन जाती है, पर फिर भी उसमें लेशमात्र परिवर्तन नहीं होता।वह सम्पत्ति को अच्छे सामाजिक कामों में लगा देती है।यथा -

> मम्मा, मैं काजिम की पहचान उसके घर की जिम्मेदारी को भी नहीं छोड़ना चाहती हूँ...अगर मैंने उन जिम्मेदारियों को नहीं सम्भाला तो सबकुछ बिखर जाएगा।बहुत लोगों की रोजी-रोटी का सिलसिला ही नहीं, एक सामाजिक ताना-बाना मेरी वजह से टूट जाए, यह मैं कभी नहीं चाहूँगी।(शर्मा 2017:473)

वही ऐलेसन रोहन को केवल सम्पत्ति हासिल करने के लिए प्रेम का स्वांग रचकर शादी करती है।उसकी माँ उसके सामने यह शर्त रखती है कि अगर वह उनके मनपसंद लड़के से शादी करेगी तो वह अपनी सम्पत्ति ऐलेसन को देगी अन्यथा नहीं।यही कारण है कि वह रोहन को प्रेम जाल में फँसाती है। ऐलेसन के सम्बंध में रोहन कहता है-

> मुझे पता ही नहीं चला कि इतने दिनों तक जिसके साथ मैं रहा हूँ, वह फरिश्ता नहीं, एक जहर से बुझा खंजर था, जो मेरे दिल के टुकड़े-टुकड़े करने पर आमदा है।(शर्मा 2017:207)

रूही रोहन के बचपन की दोस्त है। वह रोहन को बहुत अच्छी तरह से समझती है, वह रोहन के बर्ताव निरीक्षण करती है, उसे तनिक सुख देने का प्रयास करती है।पर ऐलेसन रोहन की पत्नी होती हुई भी उसे समझ नहीं पाती या कहे कि वह समझने की कोशिश ही नहीं करती।ऐलेसन रोहन को सुख देना तो दूर की बात, वह अपने बेटे को लेकर फरार हो जाती है।वह रोहन को झूठे मामलों में फँसाकर जेल भिजवा देती है ।

मातृत्व की बात की जाए तो ऐलेसन रोहन के बेटे टेसू की माँ है, पर जब टेसू ऐलेसन के गर्भ में था, तब वह डॉक्टर के पास जाकर यह पता करने की कोशिश करती थी कि क्या गर्भ में पल रहा बच्चा पुष्ट हो चुका है।अगर बच्चा पुष्ट हो चुका है तो उसे बेकार में ढोते रहने की जरूरत नहीं, उसे बाहर निकाल देना चाहिए।रोहन उसे एक अच्छी माँ से ज्यादा कारपोरेट वर्ल्ड की अच्छी वर्कर मानता था और अच्छी दोस्त भी ।

पर वही रूही काजिम की पत्नी है; पर काजिम की मृत्यु तक वह माँ नहीं बनती, जबकि उसे माँ बनने की अत्यंत इच्छा थी, जो अधूरी रह गई।उपन्यास के अंत में जब रोहन के साथ उसकी शादी तय होती है, तब वह माँ बनने की अपनी इच्छा जाहिर करती है।रूही रोहन से कहती है -

> एक ऐसी प्यास पाल बैठी जो काजिम के न होने के एहसास को बढ़ावा दे रही थी और उन्हीं दिनों जाने कैसे पिघली बर्फ के नी नीचे से एक गर्म सोता फूटा जो तुम्हारे प्यार का था।यकीन जागा कि मैं माँ बन सकती हूँ।तुम्हें पाकर मैं अपने को भी सम्भाल सकती हूँ। (शर्मा 2017:456)

इसी प्रकार अंत तक रूही रोहन को साधारण जीवन यापन में सहायता करती है ।

'पारिजात' नासिरा शर्मा द्वारा रचित अबतक का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इस पुरुष प्रधान उपन्यास के लिए वर्ष 2016 में नासिरा शर्मा को साहित्य अकादेमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।'पारिजात' उपन्यास की मुख्य विषय-वस्तु ही है पारिवारिक विघटन।इस उपन्यास में लेखिका ने भारतीय संयुक्त-परिवार के विघटन के प्रमुख कारणों तथा उससे उत्पन्न समस्याओं का चित्रण किया है।नासिरा शर्मा ने 'पारिजात' उपन्यास में भारतीय परिवार-व्यवस्था और स्त्री की भूमिका पर प्रकाश डाला है।इस उपन्यास में चार प्रमुख स्त्री पात्र हैं - नायक रोहन की माँ प्रभा, रूही की माँ फिरदौसजहाँ, नायिका रूही और रोहन की पत्नी ऐलेसन।नासिरा शर्मा ने इस उपन्यास में दिखाया है कि माँ स्त्री का सर्वश्रेष्ठ रूप है।एक माँ में वह शक्ति होती है, जिससे वह अपने बच्चों का भविष्य भाँप लेती है; परंतु वह अपनी वात्सल्य भावना के कारण कुछ कर नहीं पाती है।रोहन की माँ प्रभा को पता चल जाता है कि रोहन अगर ऐलेसन से शादी करता है, तो वह कभी खुश नहीं हो सकता।पर वह बेटे की ओर देखकर कुछ नहीं कहती और अंत में वही होता है।रूही की माँ फिरदौसजहाँ आम माताओं की तरह चाहती है कि उसकी बेटी का संसार दुबारा बस जाए, वह इसी सोच में रहती है, और वह 'मुताह' की बात करती है। स्त्री का और एक रूप है और वह है बेटी का।कहा जाता है जिस घर में बेटी पैदा होती है, वहाँ साक्षात लक्ष्मी वास करती है।रूही एक आदर्श बेटी है, वह अपनी माँ का ख्याल भी रखती है।उनके विचारों तथा इच्छाओं का सम्मान भी करती है।परिवार में स्त्री का सबसे महत्वपूर्ण स्थान होता है पत्नी के रूप में।पति और पत्नी एक सिक्के के दो पहलू होते हैं।स्त्री चाहे तो अपना संसार बचा सकती है, चाहे मिटा भी सकती है।ऐलेसन संसार को ध्वंस करनेवाली स्त्री है, जो रोहन का घर बरबाद कर देती है और रूही घर जोड़नेवाली स्त्री है, जो रोहन की बिखड़ी जिन्दगी को फिर से सबारने की कोशिश करती है ।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के पश्चात हम यह कह सकते हैं कि भारत संयुक्त-परिवार व्यवस्था का देश है; पर आज कल औद्योगीकरण तथा नई शिक्षा नीतियों के तहत भारतीय परिवार-व्यवस्था प्रभावित हो रही है।धीरे-धीरे भारतीय संयुक्त परिवारों में विघटन हो रहा है।आज संयुक्त-परिवार एकल परिवारों में तब्दील हो रहा है।परिवार समाज निर्माण की सबसे लघु परंतु आवश्यक इकाई है और स्त्री परिवार का सबसे महत्वपूर्ण अंग है।क्योंकि एक स्त्री एक ही समय में एक माँ, एक बहन, एक पत्नी, एक दोस्त आदि की भूमिका निभाती है।स्त्रियों को करूणा का प्रतीक माना जाता है।जिस तरह एक स्त्री में नवनिर्माण की शक्ति रहती है, ठीक उसी प्रकार एक स्त्री ध्वंसलीला भी कर सकती है।स्त्री में परिवार को जोड़े रखने की तथा बिखर देने की शक्ति होती है।आजकल समय की माँग को पूरा करते हुए लोग अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा से शिक्षित कर रहे हैं।इससे निस्संदेह समाज को बहुत ही फायदा मिल रहा है; पर कहना न होगा कि इनमें से कुछ ऐसी स्त्रियाँ भी हैं, जो अपनी शिक्षा तथा ज्ञानराशि का गलत फायदा भी उठा रही हैं।अतः समाज तथा परिवार को स्वस्थ बनाए रखने में ऐसी स्त्रियाँ बाधा उत्पन्न करती हैं।हमें ऐसी स्त्रियों से बचकर चलना चाहिए।कहा जाता है कि एक गन्दी मछली पूरे तालाब को गन्दा कर देती है, ठीक उसी प्रकार एक गलत इंसान पूरे समाज के लिए हानिकारक हो सकता है ।

ग्रंथ-सूची

अहमद, एम. फिरोज. नासिरा शर्मा:एक मूल्यांकन. सामयिक बुक्स: नई दिल्ली, 2017.

शर्मा, नासिरा, पारिजात. किताबघर प्रकाशन:नई दिल्ली, 2017.

संपर्क-सूत्र:
बकलीया,शिकारी पथार
कार्बि आङ्लङ,असम
ई-मेइल: triptiacharjee83@gmail.com